धर्म की आड़ में नारी शोषण का आख्यान 'हलाला'

शबाना हबीब *

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" का जाप करनेवाले हमारे समाज में नारी की अवस्था बदत्तर होती जा रही हैं | चारों ओर समानता की बहस हो रही है | लेकिन फिर भी नारी की अवस्था में सुधराव नहीं आ गई | नारी केलिए जितनी भी योजनाएं बनाएं ,जब वह अपनी ताकत पहचानकर खुद केलिए कुछ करने और कहने तैयार हो जाएगा तब ही इसमें कुछ बदलाव आ जाएगा | धर्म का उदय समाज को नए रास्ते में ले जाने केलिए हुआ था | लेकिन धर्म ने भी नारी को नहीं छोडा है | साहित्यकारों द्वारा धार्म की आड़ में चल रहे नारी शोषण को आधार बनाकर समय समय पर साहित्य लिखा करता है | इसी विषय को आधार बनाकर २०१६ में लिखा गया उपन्यास है 'हलाला' |

भगवान दास मोरवाल द्वारा लिखा गया 'हलाला' उपन्यास में नारी मन के उथल –पुथाल का सही चित्र प्रस्तुत होता है | हलाला इस्लाम धर्म की एक रिवाज है | जिसके अनुसार पति अपनी पत्नी को तलाक देने के बाद फिर उनके साथ संबंध स्थापित करना चाहता तो पत्नी को गैर मर्द के साथ दुबारा शादी करना पड़ेगी |और शारीरिक संबंध भी रखना पड़ेगा | फिर उनसे तलाक लेकर ही पहले पति के साथ रह सकती है | हलाला के बारे में लेखक कहता है कि – "हलाला का मतलब है एक तलाकशुदा औरत किसी दूसरे मर्द से निकाह करे ,और फिर उससे या तो तलाक ले या उसके उस शौहर की मौत हो जाए ,तभी वह पहले शौहर केलिए हलाल होती है – इसी का नाम हलाला है|"१. हलाला जैसे रिवाज के शिकार हुएएक नारी की व्यथा कथा ही हलाला उपन्यास का इतिवृत्त है| इस उपन्यास की नायिका नजराना को इन तमाम परिस्थितियों से

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सरकारी संस्कृत कॉलेज, तिरुवनंतपुरम ६९५०३४

गुजरनी पड़ती है| इसलिए उनका मन उलझ जाता है | नजराना तीन बच्चों की माँ है| इसका परवाह किए बिना पति ने जबरदस्ती में उसे तलाक दे दिया |

तलाक एक ऐसी कुप्रथा है ,जिसने न जाने कितनी मुस्लिम औरतों की जिंदगी बर्बाद किया है | हदीज के मुताबिक़ तलाक ऐसी जल्दबाजी में करनेवाला कार्य नहीं है | अगर पति पत्नी के बीच कुछ प्रश्न ऐसे आजाये जिससे दोनों एक साथ जीना नहीं चाहते तो पहले घरवालों से फिर जमात में जाकर कहना चाहिए| जमातवाले समझौता करने केलिए छह महीने का समय देता है | इन छह महीने में वे साथ रहते है और साथ सोते भी है | इसी बीच बच्चा पैदा हो जाते तो फिर भी तलाक के बारे में सोचने केलिए और भी समय देता है | किसी भी तरह आगे का जीवन साथ निभा नहीं सकते तो तलाक दे देते हैं| लेकिन आज कल यही हो रहा है कि जरा सी बात केलिए तलाक देते हैं|

नजराना बहुत सुन्दर थी | एक बार उनके ससुर की कुदृष्टि उनपर पड़ी | उसने उसे अपने बाहों में समाना चाहा | नजराना चिल्लाने लगी | आस पडोस के लोग इकट्ठा होते ही ससुर ने सारा अपराध उनपर थोप लिया | पिता के बहकाव में आकर ही पति ने उसका तलाक दे दिया | इसके बाद उनका जीवन बर्बाद हो जाती है | तलाक के बाद वह कहाँ जाएगी ? नियाज के घर के किवाड़ पर बैठी रही | समाज की नज़रों से बचाने केलिए पिता और बेटा नजराना को मनाने लगा | लेकिन उसने उन लोगों के सामने यही शर्त रखा की पूरे पंजायत के सामने उनसे माफ़ी माँगना | लाचार होकर वे उनसे मांफी मांग लिया | लेकिन इससे काम नहीं चला | दुबारा नियाज के साथ रहने केलिए नजराना को हलाला होना पडेगा | यहाँ पर गलती किसने की और दंड किसको भोगना पड़ता है? | नारी की इज्जत का क्या कोई महत्व नहीं है क्या? | जो चाहे नारी पर अत्याचार कर सकते हो क्या? | असल में हलाला से नारी पर ही अत्याचार हो रही है | न कि असले गुनाहकार को कोई दंड तो मिलता ही नहीं |

समाज और परिवारवालों के चाहने पर भी तलाक हुई नारी को दुबारा पहले पुरुष के साथ जीना है तो हलाला होना जरूरी है | नियाज की मां भी अपनी बहु को घर ले आने केलिए कुछ भी करने तैयार हुई | वह अपनी पडोसी नसीबन को मनाकर उनके जेठ से नजराना की दूसरी शादी कराती है | डमरू नामक युवक से उनकी शादी हो जाती है | वह एक नेक इंसान है | क्योंकि उसने नजराना के टूटे परिवार को फिर जोड़ने केलिए ही उनके साथ विवाह का नाटक रचा था | पंद्रह दिन तक साथ रहने के बाद उन्हें तलाक देंगे, लेकिन मुस्लिम रिवाज के मुताबिक साथ रहना ही नहीं हमबिस्तर भी होना पड़ता है | यानि की शारीरिक संबंध भी रखना पड़ता है | इसके बारे में

यों कह सकते है कि – "दरअसल हलाला धर्म की आड़ में बनाया गया एक ऐसा क़ानून है , जिसने स्त्री को भोग्या बनाने का काम किया है सच तो यह है कि हलाला मर्द को तथाकथित सजा देने के नाम पर गढा गया ऐसा पुरुषवादी षड्यंत्र है जिसका खमियाजा अंततः औरत को ही भुगतना पड़ता है | सजा भी ऐसी है जिसे आदिम बर्बरता के आलावा कुछ नहीं कहा जा सकता |"२.

बिना शारीरिक संबंध से तलाक नहीं मिलेगा | लेकिन पहले नजराना इसकेलिए तैयार नहीं हुई | बाद में नियाज (पहला पति) के साथ रहने की इच्छा से वह इसकेलिए राज़ी होकर डमरू के पास चली जाती है | लेकिन डमरू उसकी अवस्था जानकार उनको यह आश्वास देकर वापस भिजवा देती है कि जमात के सामने हमबिस्तर हुए ऐसा झूठ बोलेगा | अगले दिन सबेरे ही खबर तूफ़ान की तरह फ़ैल गया कि दोनों का हमबिस्तर हो गया | यह समाचार सुनते ही नियाज की माँ उसे अपनाने केलिए हिचकते हैं| और कहती है –"मैं ना घुसणा दूँगी ऐसी रंडी ए अपणा घर में |"३.

वाकई डमरू ने जमात के सामने झूठ कहा | लेकिन उसकी इंसानियत को ढोस न पहुँचने केलिए,अपने सास के मन की बात जानकार नजराना ने जमात के सामने सत्य कहा | उनके सास भी दूसरे पुरुष से शारीरिक संबंध रखनेवाली नजराना को स्वीकार करने केलिए दुबारा सोच रही है | अपने ऊपर हो रहे इस अत्याचार से तंग आकर डमरू से तलाक दिलवाने केलिए इकट्ठे हुए जमातवालों से नजराना के इस कथन में नारी की नियति पर उनका विद्रोह और घुटन समा हुआ है ,देखिये – "हम कोई लत्ता-कपड़ा है के जब जी करे पहन लेओ, और जब जी करे अन्ने उतार के फेंक देओ ?"४| इस्लाम धर्म में पुरुष को औरत का आका बताया है | पत्नी को पति जो कुछ कहता है उसका अनुसरण करना पड़ता है सर हिलाकर हां में हां मिलाना पड़ता है | लेकिन अपने ऊपर किये जानेवाले अत्याचार से तंग आकर नारी प्रतिशोध की आग में जलकर कुछ कहती है तो वह धर्म और धर्मवालों के खिलाफ हो जाएगा | लेकिन नजराना अडिग होकर अपना फैसला सुना देती है कि- "मेरी आबरू तो या आदमी ने वाही दिन तार –तार कर दी ही, जा दिन याने चौड़ा में मेरो आसरा छीन लिया हो, और मैं एक पराया मर्द के संग सोणे को मजबूर कर दी ही ...."५.|

औरत सब कुछ सहती है | लेकिन जब उनकी इज्ज़त का सवाल आ जाती है तब उनका रूप अलग हो जाती है | प्रतिकार की ज्वाला में धधकती नजराना से अपने बच्चों के बारे में पुछा तो उन्होंने ऐसा कहा कि –"बालक !मैंने उन चोदान को कोई ठेका ले राखे है ...वही पालोगो जाने वे पैदा करा हैं"६| उन्हें अपने परिवार से बहुत प्यार था ,इसलिए ही वह सबकुछ सहकर भी नियाज के साथ रहना चाहती है | लेकिन परिस्थिति ने उन्हें दुबारा सोचने को मजबूर कर देती कई |

अब तक इस्लामी परिवेश में पली नारी डरी, सहमी रहती थी | लेकिन इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह कर दिखाया कि इन नारियों में भी ऐसी ताकत है इस ऐसे संमाज में लड़ने की | चार दीवारों के अंदर सिमटकर रहनेवाली मुस्लिम नारी ,परिस्थिति वश अपने औकात समझकर अपने लिए एक अच्छा निर्णय लेती है | अगर नजराना पहले पति के साथ रहना चाहती तो समाज उसे एक बतचलन औरत के सामान देखेंगी | यह जानकार ही उसने डमरू के साथ जीने का निर्णय कर लेती है | यह उपन्यास सचमुच नारी विमर्श का नया रूप पाठकों के सामने पेश करते हैं | प्रतिशोध करनेवाली नारी का सही चित्र इस उपन्यास में दिखाया है | वर्तमान समय में सामजिक अन्याय बढता आ रहा है | ऐसे अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना हमारा फ़र्ज है | हलाला की नायिका अपने उपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठाती है | इसलिए हम कह सकते हैं हलाला एक ऐसा उपन्यास जिसमें तलाक जैसी कुप्रथा का खुला चित्र प्रस्तुत है | यह भी नहीं यह उपन्यास नारी मन की विह्वलता का सही चित्रण प्रस्तुत करते हैं |

सन्दर्भ सूची

1. हलाला –भगवानदास मोरवाल –वाणी प्रकाशन २०१६, . पृष्ठ सं १२९.
2. वही ,आवरण पृष्ठ पृष्ठ सं
3. वही , पृष्ठ सं १५८
4. वही , पृष्ठ सं १७५
5. वही , पृष्ठ सं १७८
6. वही , पृष्ठ सं १८४